Acknowledgement

: आभार :

इस शोध-प्रबंध को सफल एवं निर्विघ्न बनाने हेतु सर्वप्रथम मैं अपने पिता श्री रामयतन जी को साधुवाद देना चाहता हूँ। जो भारत सरकार (दूर संचार विभाग) में कार्यरत होने के बावजूद भी मुझे इस शोध-प्रबंध को सफल बनाने के लिए यशोचित मार्गदर्शन, मानसिक संबल और आवश्यकतानुसार आर्थिक सहायता भी प्रदान करते रहे हैं। इसके साथ ही साथ मैं अपनी माता श्रीमती बेलादेवी को भी विस्मृत नहीं कर देना चाहता हूँ, गृह कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी उन्होंने इस शोध-प्रबंध के शोध-काल दौरान मेरी सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का ख्याल रखा। माता-पिता की इस प्रेमानुरागपूर्ण दृष्टि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की धृष्टता मैं कतई नहीं करना चाहूँगा।

इसके बाद में परिवार के उन सभी बड़े सदस्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे शोध के दौरान मेरे मनोबल को बढ़ाया। उनमें बड़े बाबूजी श्री बलराम, बड़ी माता श्रीमती धनरीदेवी तथा कर्मठ, ईमानदार एवं परिश्रमी शिक्षक मझले बाबूजी श्री रामपलट जी तथा मझली माता स्व. श्रीमती देवराजी देवी के वात्सल्य एवं चरणों की कृपा का अक्षय आशीर्वाद ही मुझे शोध जैसे भगीरथ कार्य को करने के लिए प्रेरित

करता रहा।

गुरुवर डॉ. विष्णु चतुर्वेदी जी, जिनके व्यक्तित्व के विषय में व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। परन्तु यह शोध-प्रबंध उन्हीं के सौजन्यपूर्ण पथ-प्रदर्शन का व्यक्त रूप है। यदि मुझे इनका पूर्ण मार्गदर्शन न मिला होता तो यह दुरूह कार्य पूर्ण करना मेरे लिए संभव ही नहीं था।

साथ ही अनुज डॉ. केतन, डॉ. सिद्धार्थ, हेमंत (आई.टी.इनजीनियर) और छोटी बहनें रेनुका और हेमलता भी धन्यवाद के पात्र हैं।

कला संकाय के डीन प्रो. आर.जे. शाह और हिन्दी विभागाध्यक्षिका सुश्री डॉ. अनुराधा दलाल के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही हिन्दी विभाग के प्रोफेसर पी.के.देसाई, प्रोफेसर ए.के.गोस्वामी, डॉ. पी.एन.झा, डॉ. बी.एन. कहार, डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. शन्नो पाण्डेय, प्रोफेसर जी.ए. पाण्डोर (इतिहास-विभाग), प्रोफेसर सुधा पण्ड्या (गुजराती-विभाग) और साथ ही अपने उन सभी सहयोगियों, मित्रों एवं रिश्तेदारों को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा, जिनका सहयोग इस शोध-प्रबंध के लिए महत्वपूर्ण रहा है। परम् मित्र कु. चेतना पी. परमार, राजदेव मिश्र तथा श्री अम्बादास एन. सोनार और उनकी पुत्री कु. उलका सोनी और पुत्र हितेश सोनी का सहृदय आभार व्यक्त करना आवश्यकता समझता हूँ, जिन्होंने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाने में समय-समय पर यथा सम्भव मार्गदर्शन भी किया।

अंत में पूर्वजों व अपने परम् पूज्य स्व. दादाजी श्री तपेश्वर व पूजनीया स्व. दादी माँ सुखदेई और पूज्य नानाजी स्व. श्री रामनन्दन व नानीजी स्व. रजिया देवी के चरण कमलों में मैं अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

- शोधार्थी -

30/12/03

(विजयकुमार जैसवार)